Total No. of Printed Pages—3

4 SEM FYUGP HINC4A

2025

(June)

DIBRU COLLEGE CENTRAL LIBRARY
ESTD -1963
DIBRUGARH

HINDI

(Core)

Paper : HINC4A

(आदिकालीन एवं मध्यकालीन हिन्दी कविता)

Full Marks : 60

Time : 2 hours

The figures in the margin indicate full marks for the questions

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर पूर्ण वाक्य में दीजिए : 1×6=6

(क) विद्यापति के काव्य में किस रस की प्रधानता है?

(ख) कबीर को 'भाषा का डिक्टेटर' किसने कहा है?

(ग) सूरदास की रचनाओं का सर्वप्रथम संपादन किस नाम से हुआ?

(घ) कितनी आयु में बिहारी के पिता इनको लेकर ओरछा आ गए थे?

(ङ) 'रसखान पदावली' में कुल कितने पद हैं?

(च) तुलसीदास किस मत के अनुयायी हैं?

2. निम्नलिखित अवतरणों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : 8×3=24

(क) सैसव जौबन दुहु मिलि गेल। स्रवन क पथ दुहु लोचन लेल॥
वचन क चातुरि लहु-लहु हास। धरनिये चाँद कएल परगास॥
मुकुर लेई अब करई सिंगार। सखि पूछह कइसे सुरत-बिहार॥
निरजन उरज हेरइ कत बेरि। हसइ से अपन पयोधर हेरि॥
पहिल बदरि-सम पुन नवरंग। दिन-दिन अनंग अगोरल अंग॥
माधव पेखल अपुरुब बाला। सैसव जौबन दुहु एक भेला॥
विद्यापति कह तुहु अगे आनि। दुहु एक जोग हइ के कह सयानि॥

अथवा

कंचन-मंदिर ऊँचे बनाई कै मानिक लाइ सदा झलकयत।
प्रात ही तें सगरी नगरी नग मोतिन ही की तुलानि तुलैयत।
जद्यपि दीन प्रजान प्रजापति की प्रभुता मधवा ललचैयत।
ऐसे भए तौ कहा रसखानि जौ सांवरे ग्वार सों नेह न लैयत॥

(ख) दुलहनी गावहु मंगलचार,
हम घरि आये हो राजा राम भरतार।
तन रत फरि मैं मन रत फरिहुँ पंचतम बराती।
रामदेव मोरैं पाहुनै आये, मैं जोबन मैं माती।
शरीर सरोवर बेदी करिहूँ, ब्रह्मा बेद उचार।
रामदेव संगि भँवरी लैहूँ, धनि धनि भाग हमार।
सूर तेतीसूँ कौतिग आये, मुनिवर सहस अठ्यासी।
कहैं कबीर हम ब्याहि चले है, पुरिष एक अविनासी॥

अथवा

अविगत-गति कछु कहत न आवै।
ज्यों गूंगे मीठे फल कौ रस अन्तरगत ही भावै।
परम स्वाद सबही सु निरन्तर अमित तोष उपजावै।
मन बानी कौ अगम-अगोचर, सौ जानै जो पावै।
रूप-रेख-गुन जाति-जुगति-बिनु निरालंब कित धावै।
सब बिधि अगम विचारहिं तातें सूर सगुन-लीला पद गावै।

DIBRU COLLEGE CENTRAL LIBRARY ESTD-1963 DIBRUGARH

(Continued)

(ग) विश्वास एक राम-नाम को।
मानत नहिं परतीति अनत ऐसोइ सुभाव मन बाम को॥
पढ़िबो पर्‌यो न छठी छ मत रिगु जजुर अथर्वन साम को।
ब्रत तीरथ तप सुनि सहमत पचि मरै करै तन छाम को?॥
करम-जाल कलिकाल कठिन अधीन सुसाधित दाम को।
ग्यान बिराग जोग जप तप, भय लोभ मोह कोह काम को॥

अथवा

कवि कुल विद्याधर सकल कलाधर, राज राज बर वेष बने।
गनपति सुखदायक पसुपति लायक, सूर सहायक कौन गनै॥
सेनापति बुधजन मंगलगुरुगन, धर्मराज मन बुद्धि धनी।
बहु सुभ मनसाकर, करुनामय अरु सुर-तरंगिनी सोभासनी॥

3. निम्नलिखित में से किन्हीं **तीन** प्रश्नों के उत्तर दीजिए : 10×3=30

(क) विद्यापति की रचनाओं में भाषा के प्रयोग संबंधी जो विशेषताएँ मिलती हैं, उनका विवेचनात्मक विवरण दीजिए।

(ख) कबीरदास की भक्ति-भावना पर प्रकाश डालिए।

(ग) "सूरदास का वात्सल्य वर्णन हिन्दी साहित्य की अमूल्य निधि है।" इस कथन की समीक्षा कीजिए।

(घ) "बिहारी ने गागर में सागर भरने का प्रयास किया है।" इस कथन की विवेचना कीजिए।

(ङ) गोस्वामी तुलसीदास के व्यक्तित्व और कृतित्व पर प्रकाश डालिए।

(च) 'नागमती के विरह वर्णन' की विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

★★★